<u>संस्कृत</u>
कक्षा—11
(अंक विभाजन)

पूर्णांक-100

सामान्य निर्देश - संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अति लघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जायेंगे । प्रश्नपत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगाः-

खण्ड-क (गद्य) 20 अंक

चन्द्रापीडकथा- आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा ....यथार्थमेव नाम कृतवान्। तक।

1. गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर। 10 अंक
2. कथात्मक पात्रों का चरित्र चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)। 4 अंक
3. रचनाकार का जीवन परिचय एवं गद्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। 4 अंक
4. सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित बहुविकल्पीय प्रश्न। 2 अंक

खण्ड-ख (पद्य) 20 अंक

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)- श्लोक संख्या 01 से 26 तक।

1. किसी श्लोक की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। 2+5=7
2. किसी श्लोक की सन्दर्भसहित संस्कृत में व्याख्या। 2+5=7
3. कविपरिचय एवं काव्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द) 4
4. काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न। 2

खण्ड-ग (नाटक) 20 अंक

<u>अभिज्ञानशाकुन्तलम्</u> (चतुर्थोऽङ्कः)

1. पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। 2+5=7
2. पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। 2+5=7
3. कालिदास का जीवनपरिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। 4
4. सन्दर्भित नाटक पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न। 2

खण्ड-घ (पत्र लेखन) 6

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में-अनुप्रास एवं यमक। 4

खण्ड-च (व्याकरण)

1. अनुवाद - हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 8
2. कारक तथा विभक्ति। 4
3. समास। 4
4. सन्धि अथवा सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख, नियम। 4
5. शब्दरूप। 4
6. धातुरूप। 4
7. प्रत्यय। 2

<u>निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु</u>

खण्ड-क (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम् - कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् ''चन्द्रापीडकथा'' का पूर्वार्द्ध भाग- आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा ....यथार्थमेव नाम कृतवान्। तक

खण्ड-ख (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्-रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)

श्लोक संख्या 01से 26 तक।

खण्ड-ग (नाटक)

महाकविकालिदासप्रणीतम्-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक।

खण्ड-घ (पत्रलेखन)

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में - अनुप्रास एवं यमक।

खण्ड-च (व्याकरण)

1. **अनुवाद -**

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

2. **कारक तथा विभक्ति -**

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान -

(क) **प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)**

(1) स्वतंत्रः कर्त्ता।

(2) प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

(ख) **द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)**

(1) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।

(2) कर्मणि द्वितीया।

(3) अकथितं च।

(4) अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि। (वा0)

(ग) **तृतीया विभक्ति (करण कारक)**

(1) साधकतमं करणम्।

(2) कर्तृकरणयोस्तृतीया।

(3) सहयुक्तेऽप्रधाने।

(4) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।

(5) येनाङ्गविकारः।

3. **समास -**

निम्नलिखित समासों का ज्ञान, परिभाषा तथा संस्कृत में विग्रहसहित उदाहरण-तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि।

4. **सन्धि -** सन्धि, सन्धिविच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम।

निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान।

स्वरसन्धि- (1) इको यणचि, (2) एचोऽयवायावः,

(3) आद्गुणः, (4) वृद्धिरेचि, (5) अकः सवर्णे दीर्घः,

5. **शब्दरूप-** निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का रूप -

(अ) पुल्लिंग - राम, हरि, गुरु, पितृ, राजन्, विद्वस्।

(आ) स्त्रीलिंग - रमा, मति, नदी, धेनु, वधू।

6. **धातुरूप-** दसों लकारों का सामान्य ज्ञान तथा निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिंग एवं लृट् में रूप।

परस्मैपद- भू, पठ्, पा, गम्, दृश्, स्था, नी, प्रच्छ के रूप।

7. **प्रत्यय-** क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, यत्।

टिप्पणी-संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जायेगी।

30 प्रतिशत कम किया गया पाठ्यक्रम।

खण्ड-क (गद्य)

चन्द्रापीडकथा

(साहं पितृभवने बालतया.....सर्व रमणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरीं ददर्श)

खण्ड-ख (पद्य)

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)

(श्लोक संख्या 27 से 40 तक)

खण्ड–च (व्याकरण)

कारक एवं विभक्ति- द्वितीया विभक्ति- अधिशीङस्थासा कर्म, कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।

स्वर सन्धि- एङिपररूपम्, एङःपदान्तादति।

शब्दरूप- पुल्लिंग- भगवत्, करिन्, पति, सखि, चन्द्रमस्।

स्त्रीलिंग- वाच्, सरित् श्री, स्त्री, अप्।

धातुरूप-परस्मैपद-अस्, नश्, आप्, शक्, इष्, कृष्।